दैनिक भास्कर

जयपुर 23-12-2021

वुमन ट्रांसफोर्मिंग इंडिया अवॉर्ड्स-2021 में शामिल हुईं 100 से अधिक वुमन आंत्रप्रिन्योर्स

घूंघट करें, लेकिन अपनी बातें और विचार सबके सामने खुलकर रखें

सिटी रिपोर्टर | जयपुर

राजस्थान में टैलेंट की कमी नहीं है। जरूरत है तो केवल नए आइडियाज पर मिलकर बात करने और काम करने की। महिलाओं के घूंघट करने में कोई बुराई नहीं है। बेझिझक करें, लेकिन अपने बारे में खुलकर बात करें। अपनी बात हर छोटे-बड़े मंच पर रखें। आइडियाज साझा करें। अपने हुनर को दुनिया के सामने रखें। खुद की अलग पहचान बनाने से कतराएं नहीं। यह कहना था आर्च कॉलेज ऑफ डिजाइन एंड बिजनेस की फाउंडर व सीईओ अर्चना सुराणा का। वे बुधवार को 'वुमन-इन चार्ज पाथवेज टू आंत्रप्रिन्योरशिप' सेशन में बोल रही थीं। इस मौके पर 'वुमन ट्रांसफोर्मिंग इंडिया अवॉर्ड्स-2021 के पांचवें संस्करण के प्रचार के लिए रोड शो का आयोजन किया गया। टेक्नो हब में सूचना प्रौद्योगिकी और संचार विभाग राजस्थान ने नीति आयोग के सहयोग से इसका आयोजन किया था। इसका मकसद वुमन ट्रांसफॉर्मिंग इंडिया (डब्ल्यूटीआई) के संदेश को बढ़ावा देना और प्रदेश की वुमन आंत्रप्रिन्योर्स के साथ नेटवर्क स्थापित करना है। इस कार्यक्रम में महिला संस्थापकों के अलावा सीईओ सहित 100 से अधिक वुमन आंत्रप्रिन्योर्स ने हिस्सा लिया।

कैदियों के बनाए प्रोडक्ट ई-बाजार प्लेटफॉर्म पर शेयर करेंगे

स्वतंत्रता के 75 वर्ष का जश्न मनाने के लिए नीति आयोग की प्रमुख पहल 'द वुमन आंत्रप्रिन्योरशिप प्लेटफॉर्म' उन 75 महिलाओं को सुविधा देगी जो लगातार असाधारण काम करते हुए शहरों, कस्बों, जिलों, गांवों से होकर समाज को नई दिशा देते हुए समाज बदल रही हैं। डिपार्टमेंट ऑफ आईटी एंड कम्युनिकेशन कमिश्नर संदेश नायक ने कहा, रूरल आंत्रप्रिन्योरशिप पर फोकस कर रहे हैं। ई-बाजार कॉन्सेप्ट को बढ़ावा दे रहे हैं, उस प्लेटफॉर्म विभाग जयपुर सेंट्रल जेल के कैदियों के बनाए प्रोडक्ट्स को ई-बाजार प्लेटफॉर्म पर शेयर करेंगे। 'रिइंवेंटिंग यव एज एन आंत्रप्रिन्योर' सेशन में सुरभि मेहता ने कहा, कोविड शुरू हो चुका था ऐसे में हमें अपने बिजनेस आइडिया को पूरी तरह से ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर शिफ्ट करना पड़ा। हमें नए सिरे से प्लानिंग करके वेबसाइट्स बनानी पड़ीं। पारुल अग्रवाल ने कहा, पॉटरी क्राफ्ट व उससे बनी ज्वैलरी को मार्केट में लाना काफी चैलेंजिंग था। प्रीति पटेल ने कहा, मुझे शुरुआती दिनों में फील्ड वर्क के दौरान वॉशरूम तक नहीं मिलते थे। इसलिए कई बार मैं पानी ही नहीं पीती थी, जिससे वॉशरूम न जाना पड़े।